17 क्रमबद्धता (Rearrangement)

➢ क्रमबद्धता पर आधारित प्रश्न दो तरह से पूछे जाते हैं:—

I. वाक्य में क्रमबद्धता : इस तरह के प्रश्नों में अव्यवस्थित वाक्यांशों से एक सही क्रमबद्ध वाक्य बनाना होता है।

II. अनुच्छेद में क्रमबद्धता : इस तरह के प्रश्नों में अव्यवस्थित वाक्यों से एक सही क्रमबद्ध अनुच्छेद बनाना होता है।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

I. वाक्य में क्रमबद्धता

निर्देश: *नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में वाक्य के पहले और अंतिम भागों को क्रमशः (1) और (6) की संख्या दी गई है। इनके बीच में आने वाले अंशों को चार भागों में बाँटकर (य), (र), (ल), (व) की संख्या दी गई है। ये चारों भाग उचित क्रम में नहीं हैं। इन्हें ध्यान से पढ़कर दिए गए विकल्पों में से उचित क्रम चुनिए, जिससे सही वाक्य का निर्माण हो।*

1. (1) स्वदेश-प्रेम के
(य) नागरिकों ने देश के (र) सदा
(ल) आह्वान पर (व) वशीभूत होकर
(6) बड़े से बड़ा त्याग किया है।
(a) व य ल र (b) य र ल व
(c) ल व र य (d) व र ल य

2. (1) गृहिणी गृहस्थ जीवनरूपी नौका की वह पतवार है
(य) इस नौका को
(र) बचाती हुई
(ल) थपेड़ों और भंवरों से
(व) जो अपनी बुद्धिबल, चरित्रबल और त्यागमय जीवन से
(6) किनारे तक पहुँचाती है।
(a) य र ल व (b) र ल य व
(c) ल र व य (d) व य ल र
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

3. (1) मेरा विश्वास है कि
(य) जिस चीज में मनुष्य के प्यारे हाथ लगते हैं
(र) और मन की पवित्रता
(ल) उसमें उसके हृदय का प्रेम
(व) सूक्ष्म रूप में मिल जाती है
(6) उसमें मुर्दे को जिन्दा करने की शक्ति आ जाती है।
(a) य ल र व (b) र व ल य
(c) ल व य र (d) व र य ल
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

4. (1) देश में अनुशासन की पुनः स्थापना हेतु
(य) का थोड़ा-बहुत समावेश
(र) यह आवश्यक है कि हमारी शिक्षा-व्यवस्था में
(ल) अवश्य किया जाए
(व) नैतिक और चारित्रिक शिक्षा
(6) ताकि छात्रों को कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का ज्ञान हो सके।
(a) य र ल व (b) र व य ल
(c) ल व य र (d) व ल र य
(लेखाकार परीक्षा, 1997)

5. (1) जब तक प्रेमचन्द जी
(य) मुझे मुश्किल से घण्टे-आधे घण्टे का समय मिलता
(र) मेरे घर रहे
(ल) जब मैं उनके साथ चाय पीता था
(व) अन्यथा उनका समय अन्य व्यक्ति अधिकतर
(6) उनकी अनिच्छा से अपने अधिकार में कर लेते।
(a) य व ल र (b) र य ल व
(c) ल र व य (d) व य र ल
(लेखाकार परीक्षा, 199

6. (1) जिस समाज में ब्याहता को
(य) अकारण ही अग्नि की भेंट चढ़ा दिया जाता हो
(र) वह समाज निश्चित रूप से
(ल) प्यार के स्थान पर यातना दी जाती है
(व) सभ्यों का समाज नहीं
(6) अपितु नितान्त असभ्यों का समाज है।
(a) य व र ल (b) र ल व य
(c) ल य र व (d) व र य ल
(लेखाकार परीक्षा, 19

7. (1) धूप में चमकता
(य) हरा-भरा बगीचा (र) वे पेड़ अब बहुत
(ल) दीख रहा है, सामने (व) बड़े हो गए हैं
(6) जिन्हें बाबा ने लगाया था।
(a) य ल र व (b) र ल व य
(c) ल र व य (d) व य र ल *(रेलवे, 19*

8. (1) धनिया ने नाक सिकोड़कर कहा
(य) उसका नाम सुनकर
(र) मैंने तुमसे सौ बार
(ल) मेरे मुँह पर भाइयों का बखान न किया करो
(व) हजार बार कह दिया कि
(6) मेरे देह में आग लग जाती है।
(a) य व र ल (b) र व ल य
(c) ल य र व (d) व य ल र *(रेलवे, 1*

9. (1) वह भाषा जो सार्वजनिक हो
(य) अर्थात् सारे राष्ट्र के निवासियों द्वारा
(र) और राजनीतिक कार्यों में जिसका प्रयोग किया जाए
(ल) बोली और समझी जा सके
(व) साथ ही साथ उसे संविधान द्वारा स्वीकृति प्राप्त हो
(6) ऐसी भाषा को हम राष्ट्र भाषा कहेंगे।
(a) य ल र व (b) र ल व य
(c) ल य र व (d) व र य ल *(रेलवे,*

10. (1) सामाजिक जीवन में
(य) क्रोध की जरूरत बराबर पड़ती है
(र) मनुष्य दूसरों के द्वारा पहुँचाए जाने वाले बहुत से
(ल) यदि क्रोध न हो तो
(व) कष्टों की चिर निवृति का
(6) उपाय ही न कर सके।
(a) य ल र व (b) र य ल व
(c) ल र व य (d) व य र ल *(रेलवे,*

11. (1) मरुभूमि राजस्थान की प्रत्येक स्थली पर
(य) जहाँ पद्मिनी और लक्ष्मीबाई ने देश के हितार्थ तलवार धारण की
(र) जहाँ की देवियों ने अपने सतीत्व की
(ल) रक्षा के लिए अपने प्राण अग्निदेव को समर्पित कर दिए
(व) वहाँ के वीरों का रक्त प्रवाहित हुआ
(6) और शत्रुओं का मान मर्दन किया।
(a) य र ल व (b) व य र ल
(c) ल व य र (d) व र ल य *(रेलवे, 1998)*

12. (य) बेकारी की समस्या (र) बढ़ती जा रही है
(ल) शिक्षित वर्ग की (व) दिन-प्रतिदिन
(a) र य व ल (b) ल य व र
(c) व ल र य (d) य र ल व *(रेलवे, 1998)*

13. (1) काव्य के विषय में द्विवेदीजी की एक
(य) विशेष प्रकार की रुचि बन गई थी और चूँकि वे
(र) कवि की दृष्टि से करते थे अतः अनेक नए काव्यों को, जो
(ल) काव्य का अध्ययन आलोचक की दृष्टि से नहीं वरन्
(व) उनके संस्कारों से मेल नहीं खाते थे, मुक्त भाव से स्वीकार करना
(6) उनके लिए कठिन हो जाता था।
(a) य र ल व (b) य ल र व
(c) य व र ल (d) य व ल र
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

14. (1) वैसे देखा जाए तो
(य) प्रकृति स्वयं उस शक्ति का निर्माण करती है, जो
(र) नाना प्रकार के दाहक और पाचक रसों के रूप में
(ल) उदर के भीतर कोई अग्नि की ज्वाला नहीं है, किन्तु
(व) नाना भाँति के खाद्य पदार्थों अर्थात् भोज्य को
(6) पचा सकती है।
(a) ल य र व (b) य र व ल
(c) ल र य व (d) र य व ल
(एस० एस० सी०, 1999)

15. (1) हमें यह समझ लेना चाहिए कि
(य) एक सुन्दर स्वरूप है और यह भी मानना होगा कि
(र) धर्म की भाषा अधिक स्पष्ट, मूर्त्त और परिष्कृत
(ल) होती गई है और इसके लिए बहुत हद तक
(व) धर्म मानव जाति की मूलगत अनुभूतियों का
(6) विज्ञान ही उत्तरदायी है।
(a) य र ल व (b) र ल व य
(c) व य र ल (d) व य ल र
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

16. (1) मिथकीय आवरणों को
(य) अर्थ देने वाले लोग
(र) सार्वभौम रचनात्मकता को पहचानने वाले कला समीक्षक
(ल) हटा उसे तथ्यानुयायी
(व) मनोवैज्ञानिक कहलाते हैं, आवरणों की
(6) कहलाते हैं।
(a) य ल व र (b) ल य व र
(c) ल र व य (d) य र व ल
(एस० एस० सी०, 1999)

17. (1) वस्तुतः हिन्दी साहित्य का आदिकाल
(य) की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है और यही
(र) अपनी विविध साहित्यिक प्रवृत्तियों,
(ल) विविधताएं आदिकालीन साहित्य की समस्याओं
(व) विविध काव्य-रूपों एवं शैलियों
(6) को जन्म देने वाली हैं।
(a) र य ल व (b) र व य ल
(c) व र य ल (d) व र ल य
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

18. (1) प्रायः विद्वान यह मानते हैं कि जीवन का बाहरी पक्ष
(य) जीवन को प्रेरित करने वाले आदर्श
(र) जैसे रहन-सहन, मकान, सड़क, यातायात के साधन आदि
(ल) जैसे सत्य, प्रेम, अहिंसा आदि
(व) सभ्यता के अन्तर्गत आते हैं और
(6) संस्कृति के अंतर्गत आते हैं।
(a) य र व ल (b) र व य ल
(c) ल व य र (d) व र य ल
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

19. (1) हमारा उद्देश्य होगा, जीवन के
(य) करना कि हमारा सामाजिक जीवन
(र) हर सांस्कृतिक पहलू का इस प्रकार विकास
(ल) पुनर्गठित हो और वह सौन्दर्य एवं आनन्द को
(व) स्वतंत्रता, समता और मानवता के आधार पर
(6) उपलब्ध करा सके।
(a) व र ल य (b) र य ल व
(c) र य व ल (d) व र य ल
(एस० एस० सी०, 1999)

20. (1) जंगल में जिस प्रकार
(य) अपनी संस्कृतियों के द्वारा एक-दूसरे के साथ मिलकर
(र) अनेक लता, वृक्ष और वनस्पति अपने
(ल) अविरोधी स्थिति प्राप्त करते हैं, उसी प्रकार राष्ट्रीय जन
(व) अदम्य भाव से उठते हुए पारस्परिक सम्मिलन से
(6) राष्ट्र में रहते हैं ।
(a) य र व ल (b) र व ल य
(c) व य र ल (d) व र य ल
(अनुवादक परीक्षा, 1999)

21. (1) अपनी व्यक्तिगत सत्ता की
(य) जगत के वास्तविक दृश्यों और
(र) जीवन की वास्तविक दशाओं में जो हृदय समय-समय
(ल) निज के योग-क्षेम से संबंध से मुक्त करके,
(व) अलग भावना से हटाकर
(6) पर रमता है, वही सच्चा कवि हृदय है।
(a) ल र य व (b) य र व ल
(c) व ल य र (d) ल व र य
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

22. (1) यदि अपवित्र और अमंगलकारी विचार
(य) हमारा सारा जीवन, उसके कार्य और फल एक दूषित वातावरण से भर जाएंगे और
(र) हमारे पार्थिव शरीर की समाप्ति ही नहीं
(ल) हमारे अन्तस् में आविर्भूत होने लगे तो
(व) अपितु उन मानव-मूल्यों की भी समाप्ति हो जाएगी जिन पर
(6) मानव-जीवन और उसका अस्तित्व अवलम्बित है।
(a) ल र य व (b) र ल य व
(c) ल य र व (d) य ल र व
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

23. (1) जो कलाकार नाटक, संगीत, नृत्य और चित्रकारी में लगे हैं, हम
(य) सामाजिक जीवन को सौन्दर्यमय बनाकर उसे
(र) जनता की इच्छाओं और आकांक्षाओं को प्रतिफलित होने दे और
(ल) उन्हें प्रोत्साहित करेंगे कि वे अपनी कलाकृतियों में
(व) उन्हें एकत्र करेंगे और

(6) आनन्द से परिपूरित करें।
(a) व य ल र (b) ल र व य
(c) व ल र य (d) य र ल व
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

24. (1) सब जानते हैं कि हिन्दी
(य) सिद्ध होगी ही, अंग्रेजी सह राजभाषा पद
(र) देर-सवेर भारत की एकमात्र राजभाषा
(ल) से हटेगी ही, तो उस स्थिति
(व) के अनुकूल अपने को बना लेने के लिए
(6) हम हिन्दी का अध्ययन कर रहे हैं।
(a) र य ल व (b) ल र व य
(c) ल य र व (d) र व ल य
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

25. (1) इस तरह हम
(य) जो अपनी लेखनी या कूची, वाणी या वाद्यों द्वारा
(र) उन सभी कलाकारों का आह्वान कर रहे हैं
(ल) एक व्यापक संगठन न होने के कारण जिनकी साधनाएँ
(व) समाज को 'सत्यं', 'शिवं', 'सुन्दरं' की ओर ले जाने में लगे हैं किन्तु
(6) इच्छित फल नहीं दे पा रही है
(a) र य ल व (b) र य व ल
(c) य व र ल (d) य र व ल
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

26. (1) कभी-कभी तय करना
(य) मानवीय विकास का इतिहास
(र) कठिन हो जाता है कि
(ल) षड्यंत्रों से बना है या यह
(व) राजा-सम्राटों के युद्धों और
(6) सारी यात्रा आदि शब्द से शुरू होकर किताब-दर-किताब होती हुई हम तक आई है।
(a) र ल य व (b) व ल र य
(c) र य व ल (d) ल र य व
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

27. (1) जिस प्रकार
(य) दहकना है उसी प्रकार (र) उसके स्वभाव का
(ल) मनुष्य का धर्म (व) अग्नि का धर्म
(6) पर्याय होना चहिए।
(a) व य ल र (b) ल य व र
(c) व य र ल (d) र ल य व *(रेलवे, 2001)*

28. (1) आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी
(य) और नवयुग की चेतना लेकर निबंध के
(र) एवं विचारात्मक कोटियों में रखे जा सकते हैं, जो
(ल) प्राचीन सांस्कृतिक परम्परा का गंभीर ज्ञान
(व) क्षेत्र में अवतरित हुए तथा इनके निबंध भावात्मक
(6) इनके व्यक्तित्व की छाप लिए हुए हैं।
(a) व र ल य (b) य ल र व
(c) र व य ल (d) ल य व र
(अनुवादक परीक्षा, 2000)

29. (1) जाति, देश और काल की सीमाओं में
(य) साहित्यिक मूल्यांकन प्रस्तुत करेंगे, तो
(र) सामयिक आवश्यकता-रागात्मक एकता
(ल) साहित्य के मूल उद्देश्य तथा
(व) बँधे रहकर यदि हम
(6) से ही दूर जा पड़ेंगे।
(a) ल र य व (b) व य ल र
(c) व र ल य (d) य ल र व
(अनुवादक परीक्षा, 200

30. (1) मनुष्य पाँव से चलता है
(य) समुदाय से चलता है (र) तब उसे जीवन कहते हैं,
(ल) प्राणों से चलता है (व) तब उसे यात्रा कहते हैं,
(6) तब उसे समाज कहते हैं।
(a) र ल व य (b) य ल व र
(c) व ल र य (d) व य र ल
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

31. (1) संक्षेपतः कहा जा सकता है कि
(य) अनायास ही मानव-जीवन की सर्वोपयोगी
(र) सरस साधन काव्य ही है, जिसका
(ल) चारों पदार्थों की प्राप्ति का सुलभ तथा
(व) अनुशीलन करने पर अल्पबुद्धि वाले प्राणी भी
(6) वस्तुओं को प्राप्त कर सकते हैं।
(a) ल र व य (b) व ल र य
(c) य र व ल (d) ल र य व
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

32. (1) सच्ची बात तो यह है कि
(य) वह अपना मनोरंजन संगीत और अभिनय जैसे
(र) किसी भी युग का प्राणी ऐसा नीरस
(ल) आनन्ददायक साधनों के
(व) और हृदयहीन नहीं होता है कि
(6) द्वारा नहीं करता।
(a) र य ल व (b) य ल व र
(c) र व य ल (d) ल व र य
(अनुवादक परीक्षा, 2005)

33. (1) साहित्यकार
(य) न तो क्रांतिकर्मी होता है
(र) सामाजिक विद्रूपताओं को परख कर
(ल) और न निरा समाज-सुधारक, वह तो
(व) उनमें यथोचित संशोधन का
(6) अन्वेषक होता है।
(a) य ल र व (b) व ल य र
(c) य र ल व (d) व य र ल

34. (1) एक
(य) एक राष्ट्रीय चेतना (र) की समष्टि ही
(ल) लेकर रहने वाले व्यक्तियों (व) भौगोलिक सीमा में
(6) देश है।
(a) य र ल व (b) य ल व र
(c) व य ल र (d) व र ल य

उत्तरमाला

1. (a) 2. (d) 3. (a) 4. (b) 5. (b) 6. (c) 7. (a) 8. (b) 9. (a) 10. (a) 11. (d) 12. (b)
13. (b) 14. (a) 15. (c) 16. (b) 17. (b) 18. (b) 19. (c) 20. (b) 21. (c) 22. (c) 23. (c) 24. (a)
25. (b) 26. (c) 27. (a) 28. (d) 29. (b) 30. (c) 31. (a) 32. (c) 33. (a) 34. (c)

★★★

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

II. अनुच्छेद में क्रमबद्धता

निर्देश : नीचे दिए गए प्रत्येक प्रश्न में अनुच्छेद के पहले और अंतिम भागों को क्रमशः (1) और (6) की संख्या दी गई है। इनके बीच में आने वाले चार वाक्य को (य), (र), (ल), (व) की संख्या दी गई है। ये चारों वाक्य उचित क्रम में नहीं हैं। इन्हें ध्यान से पढ़कर दिए गए विकल्पों में से उचित क्रम चुनिए, जिससे सही अनुच्छेद का निर्माण हो।

1. (1) जीवन एक संघर्ष है।
(य) असहाय स्थिति में भी संघर्ष में कूदा जा सकता है।
(र) मान लिया कि आपके पास साधनों का अभाव है, लेकिन आप तो हैं।
(ल) भले ही आप कमजोर हैं, लेकिन विपदाओं से भिड़ने का, कुछ न कुछ करने का साहस तो आप में है।
(व) इस संघर्ष में अपने आपको असहाय समझना और संघर्ष से मुँह मोड़ लेना उचित नहीं है।
(6) यही बहुत है।
(a) र ल व य (b) य र व ल
(c) व य र ल (d) य व ल र

(अनुवादक परीक्षा, 1995)

2. (1) दहेज प्रथा का जन्म पुरानी सामाजिक प्रथाओं में ढूँढा जा सकता है।
(य) उसे नई गृहस्थी बसानी होती है।
(र) विवाह के बाद लड़की एक नए घर में जाती है।
(ल) अपना नया घोंसला बनाने में उसे अधिक असुविधा न हो इसलिए उसे कुछ उपहार देने का रिवाज था।
(व) उपहार में उसे गृहस्थी में काम आने वाली वस्तुएँ स्वेच्छा से दी जाती थीं, कोई बाध्यता नहीं होती थी।
(6) पर धीरे-धीरे इसमें बुराइयाँ आती गईं।
(a) य र ल व (b) र य ल व
(c) र ल व य (d) र व ल य

(अनुवादक परीक्षा, 1995)

3. (1) शब्द और अर्थ को काव्य का शरीर कहा गया है। ये दोनों ही अभिन्न हैं।
(य) शब्द के साथ अर्थ का लगाव है और अर्थ के साथ शब्द का।
(र) इसी प्रकार शब्द के बिना अर्थ का मानव मस्तिष्क में कठिनाई से निर्वाह होता है।
(ल) अर्थ के बिना शब्द का कोई मूल्य नहीं।
(व) शब्द और अर्थ की एकता को पार्वती-परमेश्वर की एकता का उपमान बताकर कालिदास ने इस अटूट संबंध को महत्ता प्रदान की थी।
(6) एक के बिना दूसरे की पूर्णता नहीं, इसलिए दोनों मिलकर ही काव्य का शरीरत्व सम्पादित करते हैं।
(a) व र ल य (b) ल य र व
(c) य र व ल (d) ल र व य

(अनुवादक परीक्षा, 1995)

4. (1) आज हिन्दी को प्रत्येक क्षेत्र में सम्मान प्राप्त है।
(य) न जाने कितनी समितियाँ और अकादमियाँ सक्रिय हैं।
(र) समस्त विश्व के विश्वविद्यालयों में हिन्दी विभाग खुल चुके हैं।
(ल) हिन्दी भाषा और साहित्य को समस्त विश्व में प्रतिष्ठित करने वाले प्रशासनिक माध्यम कार्यरत हैं।
(व) उच्चस्तरीय हिन्दी अध्यापन की व्यवस्था के साथ ही शोध संस्थान भी गतिशील हैं।
(6) फिर भी हिन्दी को वह सर्वोच्च स्थान प्राप्त नहीं है।
(a) ल व र य (b) व र ल य
(c) र य ल व (d) ल य र व

(असिस्टेंट ग्रेड, 1995)

5. (1) महात्मा गाँधी के जीवन के मूल मंत्र थे—सत्य और अहिंसा।
(य) उनकी आत्मकथा 'सत्य के प्रयोग' इसका प्रत्यक्षण उदाहरण है।
(र) किसी प्रकार की हिंसा का आश्रय लेकर प्राप्त की गई स्वाधीनता भी उन्हें स्वीकार्य न थी।
(ल) अहिंसा से उनका तात्पर्य था—मनसा, वाचा, कर्मणा अहिंसा।
(व) सत्य के बिना वे एक कदम भी आगे बढ़ने को तैयार न थे।
(6) वास्तव में, गाँधी को महामानव नहीं, देवाताओं की कोटि में रखा जाना चाहिए।
(a) र ल व य (b) व य ल र
(c) य व ल र (d) ल र य व

(असिस्टेंट ग्रेड, 1995)

6. (1) हमारा देश उत्सवों और त्योहारों का देश है।
(य) ये त्योहार जनमानस में उल्लास जगाते हैं।
(र) यहाँ अनेक त्योहार मनाए जाते हैं।
(ल) समन्वय की भावना भी पैदा करते हैं।
(व) लोगों में देशभक्ति और गौरव का भाव भरते हैं।
(6) इन अवसरों पर सब मिलकर खुशियाँ मनाते हैं।
(a) र ल व य (b) र य व ल
(c) ल व य र (d) व य र ल

(असिस्टेंट ग्रेड, 1995)

7. (1) भारतीय साहित्य का आदर्श त्याग और उत्सर्ग है।
(य) किसी राष्ट्र की सबसे मूल्यवान सम्पत्ति उसके साहित्यिक आदर्श होते हैं।
(र) भारतीय स्वयं को उस समय कृतकार्य समझता है, जब वह माया बंधन से मुक्त हो जाता है।
(ल) यूरोप का कोई व्यक्ति लखपति होकर और ऊँची सोसाइटी में मिलकर स्वयं को कृतकार्य समझता है।
(व) जब उसमें भोग और अधिकार का मोह नहीं रहता।
(6) व्यास और वाल्मीकि के आदर्श आज भी भारत का सिर ऊँचा किए हुए हैं।
(a) य र व ल (b) य ल र व
(c) र व ल य (d) ल र व य

(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 1996)

8. (1) आज विज्ञान मनुष्यों के हाथों में अद्‌भुत और अतुल शक्ति दे रहा है।
(य) इसलिए हमें उस भावना को जागृत रखना है और उसे जागृत रखने के लिए कुछ ऐसे साधनों को भी हाथ में रखना होगा जो उस अहिंसात्मक त्याग-भावना को प्रोत्साहित करें और भोग-भावना को दबाए रखें।
(र) नैतिक अंकुश के बिना शक्ति मानव के लिए हितकर नहीं होती।
(ल) उसका उपयोग एक ओर व्यक्ति और समूह के उत्कर्ष में और दूसरी ओर व्यक्ति और समूह के गिराने में होता रहेगा।
(व) वह नैतिक अंकुश चेतना या भावना ही दे सकती है।
(6) वही उस शक्ति को परिमित भी कर सकती है और उसके उपयोग को नियंत्रित भी।
(a) य र व ल (b) य ल र व
(c) र य ल व (d) ल य र व

(असिस्टेंट ग्रेड, 1995)

9. (1) मनुष्य स्वभाव से देव-तुल्य है।
(य) जमाने के छल-प्रपंच और परिस्थितियों के वशीभूत होकर वह अपना देवत्व खो बैठता है।
(र) हमारी सभ्यता साहित्य पर ही आधारित है।
(ल) साहित्य इसी देवत्व को अपने स्थान पर प्रतिष्ठित करने की चेष्टा करता है।
(व) हम जो कुछ भी हैं, साहित्य के ही बनाए हुए हैं।
(6) किसी भी राष्ट्र की आत्मा की प्रतिध्वनि होती है– साहित्य।
(a) य ल व र (b) य ल र व
(c) र व य ल (d) व र य ल
(सब-इंसपेक्टर परीक्षा, 1996)

10. (1) आचार्य रामचन्द्र शुक्ल गंभीर विचारक थे।
(य) परिणामतः उन्होंने अपने निबंधों में जिस भी विषय को उठाया, उसके नए आयामों का उद्‌घाटन किया।
(र) उन्होंने अपने निबंधों में इन तीनों का समंजित रूप में उपयोग किया ।
(ल) उनका अध्ययन गहन और विस्तृत था।
(व) उनका जीवन का अनुभव और निरीक्षण भी ठोस था।
(6) 'भाव या मनोविकार' निबंध इसका स्पष्ट प्रमाण है।
(a) ल व र य (b) व ल र य
(c) य व ल र (d) य ल व र *(रेलवे, 1997)*

11. (1) अनुभूति के द्वंद्व ही से प्राणी के जीवन का आरंभ होता है।
(य) पेट का भरा या खाली रहना ही ऐसी अनुभूति के लिए पर्याप्त होता है।
(र) बच्चे के छोटे से हृदय में पहले सुख और दुःख की सामान्य अनुभूति भरने के लिए जगह होती है।
(ल) जीवन के आरंभ में इन्हीं दोनों के चिह्न हँसना और रोना देखे जाते हैं।
(व) उच्च प्राणी मनुष्य भी केवल एक जोड़ी अनुभूति लेकर इस संसार में आता है।
(6) पर ये अनुभूतियाँ बिल्कुल सामान्य रूप से रहती है, विशेष विशेष विषयों की ओर विशेष-विशेष रूपों में ज्ञानपूर्वक उन्मुख नहीं होती।
(a) ल र य व (b) व र य ल
(c) ल य र व (d) य ल र व *(रेलवे, 1997)*

12. (1) सांस्कृतिक वैविध्य के बारे में सोचना होगा।
(य) इसे चिन्तन के स्तर पर देखा जा सकता है।
(र) संस्कृति के अन्तर्तम में अनेक समानाताएँ हैं।
(ल) यही विविधता मे एकता है।
(व) यह हमें अलग-अलग नहीं बनाती।
(6) यह हमारी एक बड़ी शक्ति है।
(a) व र य ल (b) व ल र य
(c) र व ल य (d) य व र ल *(रेलवे, 1997)*

13. (1) फिर मैं सोचने लगा-अतीत क्या चला ही गया ?
(य) मैं किसी तरह विश्वास नहीं कर सका कि अतीत एकदम उठ गया है।
(र) अपने पीछे क्या हम एक विशाल शून्य मरुभूमि छोड़ते जा रहे हैं ?
(ल) कहाँ जाएगा वह ?
(व) आज जो कुछ हम कर रहे हैं, कल क्या यह सब लोप हो जाएगा ?
(6) मुझे क्षिप्रा की लोल तरंगों पर बैठे कालिदास स्पष्ट दिखाई दे रहे हैं; अतीत कहीं गया नहीं है, वह मेरी रग-रग में सुप्त है।
(a) य ल व र (b) ल य व र
(c) र व ल य (d) य र व ल *(रेलवे, 1997)*

उत्तरमाला

1. (c) 2. (b) 3. (d) 4. (b) 5. (b) 6. (b) 7. (c) 8. (d) 9. (a) 10. (a) 11. (b) 12. (a) 13. (c)

★★★